सप्रे युगीन चेतना ने 'भारत की एक राष्ट्रीयता' को परिभाषित किया, आजादी की अलख जगाई

साहित्य अकादेमी और सप्रे संग्रहालय के परिसंवाद में समवेत स्वर

❑ दीपक पगारे

माधवराव सप्रे हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत थे। सप्रे युगीन चेतना ने भारत की एक राष्ट्रीयता को परिभाषित किया। आजादी की अलख जगाई। राष्ट्र-जीवन के हर पक्ष को उद्वेलित कर भारत को नयी पहचान दी।

वस्तुतः हिन्दी नवजागरण की अगुआई संपादकों-साहित्यकारों ने की। माधवराव सप्रे हिन्दी के पहले संपादक थे जिन्हें राजद्रोह कानून में गिरफ्तार किया गया था। सप्रेजी का हिन्दी पत्रकारिता, साहित्य, भाषा, समाजसुधार, स्वाधीनता आन्दोलन, शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में आधारभूत अवदान है। उन्होंने दादा माखनलाल चतुर्वेदी, पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र, सेठ गोविंददास प्रभृति अनेक प्रतिभाओं का मार्गदर्शन किया, परिमार्जन किया।

साहित्य अकादेमी, नयीदिल्ली और माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में 29 अगस्त को आयोजित राष्ट्रीय परिसंवाद का यह समवेत निष्कर्ष है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. के.जी. सुरेश, अध्यक्ष श्री संतोष चौबे तथा सारस्वत अतिथि प्रो. चितरंजन मिश्र थे।

इसी अवसर पर डा. सुशील त्रिवेदी के मोनोग्राफ 'माधवराव सप्रे' का विमोचन अतिथियों ने किया। इसका प्रकाशन साहित्य अकादेमी ने किया है।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.जी. सुरेश ने कहा कि सप्रेजी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन के प्रति लोगों के मन में अलख जगाई। वे ऐसे पहले संपादक थे जिन पर राजद्रोह का मुकदमा चला था। उन्हें गिरफ्तार किया गया था। उनकी लेखनी की यह खूबी थी कि वे सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करते थे, शिक्षा के प्रसार के लिए प्रेरक वातावरण बनाते थे, साहित्य और भाषा का संस्कार करते थे। सप्रे संग्रहालय ने माधवराव सप्रे सार्द्धशती का राष्ट्रव्यापी अनुष्ठान कर प्रेरक और सराहनीय कार्य किया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे ने कहा कि सप्रेजी ने हिन्दी भाषा के उन्नयन के लिए काम करने का बीड़ा तब उठाया था जब खड़ी बोली हिन्दी के सर्वांगीण प्रयोग का आन्दोलन चल रहा था। कविता की भाषा तब तक बृज थी। सरस्वती संपादक महावीरप्रसाद द्विवेदी हिन्दी का परिष्कार कर रहे थे। उसे काव्य की भाषा के रूप में भी अपनाने पर जोर दे रहे थे। साहित्येतर विषयों पर भी हिन्दी में लिखे जाने का आह्वान कर रहे थे। तब सप्रेजी हिन्दी में अर्थशास्त्रीय लेखन की परंपरा बना रहे थे। आर्थिक शब्दावली गढ़ रहे थे।

साहित्य अकादेमी के हिन्दी परामर्श मण्डल के संयोजक प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि सप्रेजी का कालखण्ड भारत की नई पहचान देने वाला रहा है। वे हिन्दी के प्रारंभिक उन्नायक हैं। उनकी कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' हिन्दी की पहली मौलिक कहानी है, यह तथ्य प्रामाणिक रूप से स्थापित है। इस कहानी को हम प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' की आधारभूमि भी कह सकते हैं। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक श्री अजय कुमार शर्मा ने स्वागत वक्तव्य दिया।

आयोजन की उल्लेखनीय उपलब्धि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, एल.एन.सी.टी. विश्व-विद्यालय, सेज विश्वविद्यालय, पीपुल्स विश्व्विद्यालय के पत्रकारिता के विद्यार्थियों की अकादमिक भागीदारी रही।

प्रस्तावना वक्तव्य में सप्रे संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक विजयदत्त श्रीधर ने आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला में सप्रेजी की जन्मभूमि पथरिया (दमोह), कर्मभूमि पेण्ड्रा, रायपुर, नागपुर तथा नयीदिल्ली और भोपाल में सम्पन्न स्मृति-समारोहों तथा उनके व्यापक विचार फलक पर प्रकाश डाला। सप्रेजी के कालजयी अवदान के सभी आयामों का बिन्दुवार उल्लेख किया।

शुभारंभ सत्र के बाद तीन विचार सत्र भी हुए। इसमें पहले सत्र में 'माधवराव सप्रे और उनका युग' विषय पर सप्रे साहित्य के अध्येता डा. सुशील त्रिवेदी ने कहा कि सप्रेजी ने आम जनमानस में स्वाधीनता की ललक तो पैदा की लेकिन उन्होंने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी कलम चलाई थी। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वजों ने जिन लक्ष्यों के लिए संघर्ष किया, वे आज कहीं खो से गए हैं। हमें एक बार उस तरफ भी सोचना होगा। उन्होंने बताया कि सप्रेजी पर काफी अध्ययन के बाद किताब लिखी है। उसका उद्देश्य यह है कि लोग उनके बारे में जानें-समझें।

'संपादक माधवराव सप्रे और नवजागरण' विषय पर डा. कृपाशंकर चौबे ने वक्तव्य दिया। उनका कहना था कि हिन्दी पत्रकारिता के लिए हिन्दीतर लोगों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। सप्रेजी इसका प्रमाण हैं। उन्होंने तिलक की पत्रकारिता को हिन्दी में विस्तार देकर उनके जनजागरण के विचारों को आम जन तक पहुँचाया। प्रदेश में इसी परंपरा को राहुल बारपुते जैसे पत्रकारों ने भी निभाया है। इस दौरान उन्होंने पत्रकारिता के इतिहास पर भी प्रकाश डाला।

'माधवराव सप्रे के निबंधों में राष्ट्रबोध' पर सूचना आयुक्त श्री विजयमनोहर तिवारी ने भाव प्रवण उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि सप्रेजी पत्रकारिता के पूर्वज हैं। उनकी कहानी में पूरा देश दिखाई पड़ता है। कला-संस्कृति मर्मज्ञ विनय उपाध्याय ने सप्रेजी की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' का वाचन किया। उन्होंने कहा कि इस कहानी में कुल जमा तीन पात्र हैं लेकिन इसके मूल में माटी के प्रति अगाध श्रद्धा और सामंतवादी सोच पर कड़ा प्रहार है।

संदेश

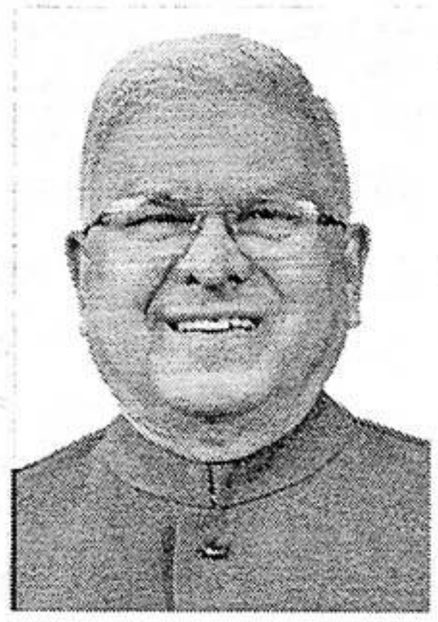

हर्ष का विषय है कि साहित्य अकादेमी और माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय ने 'माधवराव सप्रे और उनका युग' विषय पर परिसंवाद का आयोजन किया है। परिसंवाद में शामिल होने का आमंत्रण पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। मुझे खेद है कि स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो सका हूँ।

'माधवराव सप्रे और उनका युग' विषय पर परिसंवाद का आयोजन भारत की आजादी और नवजागरण काल के मनीषियों के अवदान के पुण्य स्मरण का सार्थक प्रयास है। भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के ऐतिहासिक अवसर पर आयोजन की संकल्पना के लिए साहित्य अकादेमी और माधवराव सप्रे स्मृति समाचारपत्र संग्रहालय के संस्थापक-संयोजक श्री विजयदत्त श्रीधर और उनकी टीम बधाई की पात्र है।

आशा है, परिसंवाद राष्ट्रीय जागरण की विलक्षणता, राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति महानायकों की निष्ठा और समर्पण की प्रखरता को प्रकाशित करेगा। स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों की नींव पर भविष्य के भारत के निर्माण पथ का आलोकन करेगा।

शुभकामनाएँ।

मंगुभाई पटेल
राज्यपाल
मध्यप्रदेश शासन

मोनोग्राफ 'माधवराव सप्रे' का विमोचन

इसमें कहानी कला के पूरे तत्व हैं, उन्होंने बताया कि इसे हिन्दी की पहली कहानी मानने के लिए बाकायदा कमलेश्वर ने एक बहस खड़ी की थी।

'स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी कविता' पर ललित निबंधकार डा. श्रीराम परिहार का बड़ा सरस वक्तव्य रहा। उन्होंने कहा कि स्वाधीनता आंदोलन के दौरान जिन्होंने कविताएँ लिखीं वे सभी सप्रेजी से प्रभावित थे। फिर चाहे माखनलाल चतुर्वेदी हों या अन्य। इसकी झलक उनकी रचनाओं में सहज ही मिलती है। उन्होंने इस दौरान प्रसाद से लेकर निराला और सुभद्राकुमारी चौहान की पंक्तियों को भी उद्धृत किया।

'हिन्दी में अर्थशास्त्रीय चिंतन की परंपरा और सप्रेजी' विषय पर जनसंपर्क विभाग के पूर्व संचालक श्री लाजपत आहूजा ने विचार रखे। सप्रेजी ने अर्थशास्त्र के शब्दों का सहज हिन्दी में अनुवाद किया। उनके लेखों में जिस तरह के विषयों को उठाया गया वह उनके अर्थशास्त्रीय चिंतन को प्रदर्शित करता है। 'माधवराव सप्रे का नारी चिंतन' विषय पर सप्रे संग्रहालय की निदेशक डा. मंगला अनुजा ने वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि सप्रेजी ने अपनी लेखनी से समाज में नारियों के प्रति समानता का भाव जगाया। उनका मानना था कि स्त्री की प्रगति के बिना समाज की प्रगति असंभव है। उसे जब तक घर परिवार में समानता का व्यवहार नहीं मिलेगा तब तक आपसी प्रेम का भाव नहीं जागेगा। वैचारिक सत्रों की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के निदेशक डा. विकास दवे तथा एल.एन.सी.टी. विश्वविद्यालय के कुलपति डा. एन.के. थापक ने की। डा. दवे ने कहा कि समय के साथ मीडिया के स्वरूप में बदलाव आया है लेकिन उसका लक्ष्य जन सरोकार ही रहा है। उन्होंने कहा कि मीडिया के जो नए रूप आ रहे हैं उनका स्वागत किया जाना चाहिए। डा. थापक ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम पत्रकारिता के छात्रों के लिए लाभदायी साबित होंगे। इस सत्र का संचालन डा. लावण्या शर्मा ने किया। प्रश्नोत्तर संचालन डा. अनु श्रीवास्तव ने किया। पूर्व सत्रों का संचालन सुश्री सुधा कुमार और डा. वन्या चतुर्वेदी ने किया।

❑❑